DELHIIN/2007/20081 Date of Publication: 13/12/2019 G-3/DL(N)/202/2019-21

अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

वर्ष–13 अंक–7 दिसम्बर 2019 पृष्ठ 12 वजन 20 ग्राम

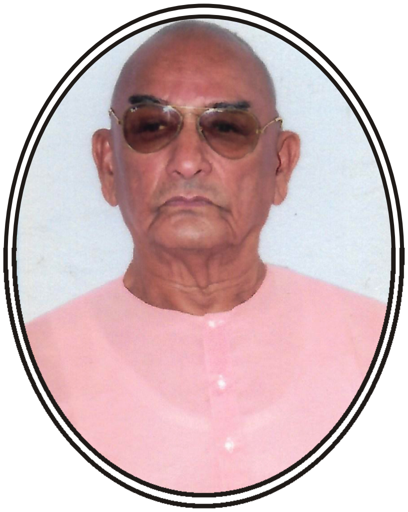

तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानंद जी

संस्थापकः

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल (रजि. सं. S/20762)

सत्संग भवन – सी.एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक–जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85

मो. : 9810344596, 011–27574151

ई–मेलः atmagyanp@gmail.co,

वेबसाईटः www.atmagyanprakashmandal.org

सम्पादक : प्रेमी गजेन्द्र सिंह
बी—99, विजय विहार, फेस—2, दिल्ली—110085

इस अंक में प्रकाशितः—

1. परावाणी से किया गया सुमरन ही सार्थक होता है।
2. अध्यात्म को जीवन में अपनाने से सभी समस्याओं का समाधान सम्भव है।
3. ब्रह्म वर्ष से जीवन का पापरूपी मैला धुल जाता है।
4. अविनाशी गुरू का शब्द असम्भव को भी सम्भव कर देता है।
5. निष्काम योगी सिद्धियों को कभी स्वीकार नहीं करता है।
6. अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थः

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार (कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग—1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन
9. **रूहानी गुरू ज्ञान ग्रन्थ (भाग—1)**

महात्मा जी द्वारा जारी ऑडियो एवं वीडियों कैसेट्सः

1. चेतन वाणी—1 (ऑडियो कैसेट)
2. चेतन वाणी—2 (ऑडियो कैसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाऊँनी वीडियों कैसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाऊँनी ऑडियों कैसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

सत्संग कार्यक्रमः— चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्संग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

संस्था का वेबसाईट : www.atmagyanprakashmandal.org है

रुहानी गुरू आनन्द के दाता शाश्वत् दण्डवत् प्रणाम!!!

सम्पादकीय

परावाणी से किया गया सुमरन ही सार्थक होता है।

वाणी चार प्रकार की होती है। परा, पश्यन्ति, मध्यमा एवं वैखरी। इनमें परावाणी सबसे श्रेष्ठ है। इस वाणी से ही परमात्मा का अखण्ड सुमरन किया जा सकता है। वैखरी वाणी मुख से बोली जाती है तथा कानों से सुनी जाती है। इस वाणी से सन्त सत्य ज्ञान की महिमा समाज को सुनाते हैं जिसे सुनकर मानव सत्य ज्ञान को जानने के लिए प्रेरित होता है। इस वाणी से सन्त कर्म प्रधान मनुष्य योनि की श्रेष्ठता तथा मानव जीवन के उद्देश्य की जानकारी देते हैं मानव जीवन में छाये मोह अन्धकार का कारण एवं उसे दूर करने के उपायों पर चर्चा की जाती है। मानव आवागमन के चक्र से किस प्रकार निकल सकता है इस विषय पर खुलकर समझाया जाता है। परन्तु वैखरी वाणी से किया गया परमात्मा का सुमरन सार्थक नहीं होता है। मध्यमा वाणी कण्ठ से निकलती है जिसे केवल मन सुनता है। पश्यन्ति वाणी हृदय से निकलती है जिसे विचार कहा जाता है। इस वाणी को कोई अन्य व्यक्ति नहीं सुन सकता है। इन तीनों वाणियों से परमात्मा का अखण्ड सुमरन नहीं किया जा सकता है क्योंकि ये तीनों वाणियाँ रात में सोते समय बन्द हो जाती हैं। इन वाणियों के द्वारा किये गये समस्त पूजा, पाठ, जप–तप आदि कर्म सकाम होते हैं जो जीव को बन्धन में बाँधे रहते हैं। अतः इनसे जीव सद्गति को प्राप्त नहीं होता है। केवल परावाणी के द्वारा ही परमात्मा का सुमरन किया जा सकता है जो सार्थक है क्योंकि यह वाणी रात में सोते समय भी बन्द नहीं होती है। यह दिन–रात चौबीसों घण्टे निरन्तर चलती रहती है। चौबीस घण्टे में हमारी श्वांस 21600 बार चलती है। साधक प्रत्येक श्वांस में होने वाले शब्द में सुरति जोड़कर सुमरन करता है तो उसे अपने जीवन में एक अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है। परावाणी से सुमरन करने वाला साधक परमात्मा को प्राप्त होता है। परावाणी के रहस्य को तत्वदर्शी सन्त खोलकर समझाते हैं। वे सर्वप्रथम जिज्ञासु के सभी संशयों का समाधान करते हैं। जब जिज्ञासु का हृदय एक अबोध बालक की तरह हो जाता है तब तत्वदर्शी सन्त जिज्ञासु को प्रातः ब्रह्म मुर्हुत में परावाणी के द्वारा ज्ञान से जोड़ते हैं और उसे शब्द में सुरति जोड़कर निष्काम ज्ञान के सुमरन की विधि बताते है जब साधक निरन्तर साधन सुमरन करता है तब उसके जीवन में निराकार ब्रह्म साकार होकर ब्रह्म प्रकाश के रूप दिखायी देता है जिससे उसके जीवन में छाया मोह अन्धकार समाप्त होने लगता है। उसे ब्रह्मनाद की अखण्ड ध्वनियाँ संगीत के रूप में सुनायी देने लगती है। इन ध्वनियों को सुनने से उसकी मुर्झावट एवं कलेश समाप्त हो जाते हैं। उसके अन्दर से पवित्र विवेक प्रकट होने लगता है। जब साधक साधन की परिपक्व अवस्था में पहुँचने लगता है तब उसके जीवन में ब्रह्माण्ड में स्थित ब्रह्म सागर से ब्रह्म वर्षा बरसने लगती है जिससे उसके अन्दर जन्म–जन्मान्तरों से भरी शुभ–अशुभ कर्म संस्कारों की कीचड़ साफ हो जाती है और उसका जीवन निर्मल एवं निष्पाप हो जाता है। परावाणी के सुमरन से निर्मल होकर साधक का जीवन शीशे की भाँति पारदर्शी हो जाता है।

अध्यात्म को जीवन में अपनाने से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान संभव है।

परमात्मा ने अपने पुत्र मनुष्य को इस संसार में बहुत कुछ पाने और कमाने के लिए भेजा है। परन्तु वह अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर केवल शरीर को ही अपना स्वरूप मान बैठा है और उसी के निर्वाह हेतु भौतिक उन्नति करने में रात–दिन लगा रहता है उसे यह आभास नहीं होता है कि वह तो एक चेतन सत्ता है और शरीर जड़ है जो एक साधन मात्र है यह केवल साधना के लिए परमात्मा ने उसे दिया है। इसलिए उसे यह समझ लेना चाहिए कि चेतन सत्ता ही मुख्य है और यह शरीर गौण है इसके लिए उसे अपना भौतिक वादी दृष्टिकोण बदलकर अध्यात्मवादी करना होगा। प्रकाश के अभाव का नाम ही अन्धकार है जब प्रकाश हो जाता है तो अन्धकार टिक नहीं पाता है। अध्यात्म ज्योति के धूमिल हो जाने पर ही मानव के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं ये समस्याएँ पारिवारिक सामाजिक, एवं राजनीतिक सभी क्षेत्रों में दिखायी देती हैं। वास्तव में ये समस्याएँ मानव को उसकी भूलों से सचेत करने के लिए चौराहे पर लगी लाल बत्ती के समान होती हैं जैसे सड़क पर चलने वाले यात्री को चौराहे पर लगी लाल बत्ती उसे सावधान करती है कि रूक जाओ अभी आगे मत बढ़ो। लालबत्ती की तरह समस्याएँ भी मानव को उन्मादी बनने से रोकती हैं। यदि मानव अपने जीवन में अध्यात्म को अपना ले तो इन सभी समस्याओं का समाधान सम्भव है। भौतिक उन्नति को ही सब कुछ मान बैठना मानव की बड़ी भारी भूल है। अध्यात्म को जीवन में अपनाकर ही अन्तःकरण पवित्र हो सकता है। अन्तकरण की पवित्रता ही उसे अपने एवं लोककल्याण के लिए प्रेरित करती है। अध्यात्म को अपनाकर ही वह संयमी एवं सदाचारी बन सकता है। उसे आत्मीयता एवं सेवा करने की भावना अध्यात्म से ही पनपती है। आत्मिक प्रगति के लिए थोड़े से साधनों के होने पर जीवन हंसते–हंसते जिया जा सकता है। सभ्य परिवार केवल वही बन सकते हैं जिनमें अध्यात्म को प्राथमिकता दी जाती है। आत्मिक विकास करना मानव की बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसके द्वारा आन्तरिक शान्ति, आत्म संतोष एवं परमात्मा की कृपा को प्राप्त करना सफलता का चिन्ह माना जाता है। जीवन के लक्ष्य की पूर्ति के लिए अध्यात्म ज्ञान से ही आत्मशक्ति का संचय किया जा सकता है। अध्यात्म ज्ञान से जीवात्मा धर्मात्मा एवं महात्मा बनती है। बाहरी कर्मकाण्डों से जीवन में वास्तविक आनन्द को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। आत्मा परमात्मा का अंशी होने के कारण उससे मिलने के लिए लालायित रहती है। क्योंकि उसे परमात्मा से मिले बिना पूर्ण शान्ति नहीं मिलती है। ये दोनों अति समीप होते हुए भी अति दूर इसलिए बने हुए कि प्रकृति का पर्दा इन दोनों के बीच पड़ा रहता है। अंगारे पर जब राख की परत जम जाती है

तब उसका स्वरूप स्पष्ट दिखायी नहीं देता है। यदि राख की इस परत को हटा दिया जाये तो अंगार अपनी पूर्व स्थिति में दिखायी देने लगता है। आत्मा में परमात्मा की सारी विशेषताएँ विद्यमान हैं परन्तु माया अथवा अज्ञान के द्वारा एक विक्षेप उत्पन्न हो जाने पर सब कुछ अस्पष्ट हो जाता है उस विक्षेप को ज्ञान साधन से हटाया जा सकता है। साधना कभी निष्फल नहीं जाती है। परन्तु उसे पूर्ण मनोयोग के द्वारा किया जाना चाहिए। अन्तकरण की कलुषता को धोने का एक मात्र उपाय साधना है। जैसे जब दर्पण पर धूल जम जाती है तो उसमें अपना चेहरा दिखायी नहीं देता है और जब पानी गन्दा हो तो पानी की तली में पड़ी हुई वस्तु दिखायी नहीं देती है। वैसे ही अन्तकरण की मलिनता के कारण आत्मा का अपना स्वरूप स्पष्ट दिखायी नहीं देता है। वासना एवं तृष्णा के आवरण एवं लोभ–मोहरूपी रस्से उसे भवबंधन में जकड़े रहते हैं। संकीर्ण स्वार्थभावना उसे निस्वार्थ सेवा में नहीं लगने देती है। अध्यात्म ज्ञान मानव का भौतिक दृष्टिकोण बदल देता है। जिससे वह जीवन मुक्ति के लिए प्रयासरत हो जाता है। निरन्तर अध्यात्म के पथ पर चलते हुए एक दिन वह अपनी सच्ची मंजिल को प्राप्त कर लेता है।

भजन

श्रद्धा लेकर आ सन्त शरण में, तू जान ले आत्म ज्ञान रे।
अनमोल ज्ञान को जगा रहे, श्री चेतन सन्त महान रे।।
जिस ज्ञान को चेतन सन्त ने, गुरू कृपा से पाया।
एकान्तबाड़ी में करी साधना, फिर जग में अलख जगाया।।
उसी ज्ञान की ब्रह्मधारा में, तू करले ब्रह्म स्नान रे। अनमोल.........
मोह निद्रा से जगा सन्त ने, सबका भरम मिटाया।
दिव्य दृष्टि खोल सेवक की, आत्म रूप लखाया।।
कलिकाल से बचने को, तू करले अमृत पान रे। अनमोल........
अज्ञान अन्धेरा मिट जाय मनका, तू ज्ञान का दीप जलाले।
बिन सन्तों के भेद न पावे, चाहे जितना जोर लगाले।।
सब जीवों में गुरूवर बसते, तू करले उनका ध्यान रे। अनमोल........
गुरू आज्ञा में समर्पित होकर, सन्त शरण में आओ।
सन्त ने ज्ञान को सिद्ध किया है, तुम भी उसको पाओ।।
कलिकाल में सच्चे सन्त की, ज्ञान से करो पहचान रे। अनमोल......

ब्रह्म वर्षा से जीवन का पाप रूपी मैला धुल जाता है।

वर्षा दो प्रकार की होती है (1) भौतिक वर्षा (2) ब्रह्म वर्षा। भौतिक वर्षा तो बादलों द्वारा समुद्र से जल उठाकर बाहर सृष्टि में होती है। इस वर्षा से नाना प्रकार के बीजों से अनेक प्रकार के पौधे अंकुरित होते हैं। इन पौधो से पेड़ बनकर अनेक प्रकार के फल एवं अन्न पैदा होते हैं। जिनसे पृथ्वी पर रहने वाले जीव प्राणियों के खाने–पीने की व्यवस्था होती है अर्थात् भौतिक वर्षा से पैदा होने वाले अन्न एवं फलों से जीवों के शरीर की खुराक बनती है। इस वर्षा से संसार में फैली बाहरी गन्दगी भी धुल जाती है तथा चारों तरफ हरियाली छा जाने से बाह्य प्रकृति में भी नवीनता दिखाई देने लगती है जब तक यह सृष्टि रहेगी तब तक धूप, हवा, वर्षा एवं जल की आवश्यकता रहेगी। जब सृष्टि का प्रलय काल हो जाता है तब ये सारी शक्तियाँ शून्य हो जाती हैं। दूसरी वर्षा ब्रह्म वर्षा है। जो ब्रह्माण्ड में स्थित सागर से साधक के जीवन के अन्दर बरसती है। जिससे साधक के अन्दर जन्म–जन्मान्तरों से भरा पाप रूपी मैला धुलकर उसका जीवन निर्मल एवं निष्पाप बन जाता है इस ब्रह्म वर्षा से साधक को जीवन की खुराक मिलती है। जब मानव को अध्यात्म ज्ञान की प्राप्ती होती है तब जिस मानव में ज्ञान के पुराने संस्कार प्रबल होते हैं। वह लगनशील होकर योग साधना में लग जाता है और निरन्तर सुमरन, साधन एवं सेवा करता हुआ शीघ्र ही गुरू कृपा को प्राप्त कर लेता है कई वर्षों तक साधन करने के उपरान्त साधक के अन्दर ब्रह्म वर्षा बरसना शुरू हो जाती है। उसके अन्दर धर्म के बीज से निस्वार्थ प्रेमरूपी अंकुर अंकुरित हो जाता है तथा उसी ब्रह्म वर्षा से साधक अधर्म क्षेत्र से धर्मक्षेत्र में भ्रमण करता है अध्यात्म जगत में पहुँच कर जीते जी में परमानन्द को प्राप्त करता है। इस वर्षा से साधक के जीवन में हमेशा खुशहाली छायी रहती है। जिससे वह समाज में सत्संग करता हुआ मानव के अन्दर अध्यात्म ज्ञान को भी जाग्रत करता है। ब्रह्म वर्षा में साधक सुमरन करता हुआ ऊपर की ओर उसी प्रकार बढ़ता है जैसे कोई यात्री पर्वत पर कदम बढ़ाकर आगे बढ़ताहै। जब साधक श्वांस की गति को ऊपर ब्रह्माण्ड तक ले जाता है और फिर उस स्वर को नीचे नाभि तक ले जाता है तो बह्म वर्षा की बूंदे एक साथ मिलकर धारा के रूप में बहना शुरू हो

जाती हैं स्वर को ऊपर एवं नीचे ले जाने का अभ्यास साधक जब निरन्तर करता है तो अनेक धाराएँ उसके अन्दर बहने लगती हैं। जब साधक शब्द में सुरति जोड़कर निरन्तर साधन करता है तो ब्रह्मधारा कई गुणा ऊँचे से बहती हुई साधक की जीवन नगरी में बरसती है तो साधक का तामस एंव क्रोध शान्त हो जाता है तथा उसके अन्दर अमृत, दया एवं निस्वार्थ प्रेम प्रकट होने लगता है। कुछ समय पश्चात् साधक चलते–फिरते भी स्वर का सन्तुलन स्थिर करने में समर्थ हो जाता है। स्वर के स्थिर हो जाने से उसके अन्दर ज्ञान अग्नि की चिनगारियाँ प्रकट होने लगती हैं। ज्ञान अग्नि की ये चिनगारियाँ योगी के अन्दर योग अग्नि के रूप में फैल जाती हैं। इस योग अग्नि में योगी प्रकृति बीज को जलाकर उसकी प्रजनन शक्ति को समाप्त कर देता है फिर योगी योग नज़र से सूक्ष्म से अतिसूक्ष्म जीव प्राणियों को देखने में भी समर्थ हो जाता है। ब्रह्म वर्षा से पवित्र होकर आत्मा रूपी "रू" अपने परमपिता परमात्मा से मिलने में समर्थ हो जाती है जहाँ उसे परम आनन्द एवं परम शान्ति का अनुभव होता है।

भजन

नये युग की नयी जवानी, गुरू के रंग में रंगा रही।
ब्रह्म सागर से ब्रह्म वर्षा, रिम–झिम रिम–झिम बरस रही।।
सावन जैसी ज्ञान की बिजली, दशों दिशा में चमक रही।
नगर निवासी जग गये सारे, सबमें खुशियाँ फैल गयी।।
ये घोर कलि में धर्मयुद्ध है, गुरू की प्रेरणा बता रही।
रण छोड़ कर कायर भागे, उनकी मति तो डूब गयी।।
कलियुग के घोर अन्धेरे में भी, रूहानी ज्योति चमक रही।
लौकिक जगत को छोड़ दिया अब रूहानी जगत की पहचान हुई।।
रूहानी गुरू के दर्शन से, सेवक की सेवा सफल हुई।
चेतन योगी गुरू की कृपा, सब प्रेमियों पर बरस रही।।

अविनाशी गुरू का शब्द असम्भव को भी संभव कर देता है।

आज कलियुग की कालिमा अधिकांश मनुष्यों में अज्ञान के रूप में छायी हुई है। इस कालिमा के कारण मानव को ज्ञान का प्रकाश नज़र नहीं आ रहा है। इसलिए वे सभी सकाम जीवन जी रहे हैं। जिन लोगों को गुरू कृपा से मानव जन्म मिला और कर्म प्रधान योनि मिली उन्हें यदि सन्त शरण में जाकर अविनाशी ज्ञान की प्राप्ती हो गयी तो वे सकाम–निष्काम के भेद को समझ गये अब वे योग साधन करके सकाम कर्मों के बन्धन से मुक्त होकर निष्काम कर्म करते हुए अपने जीवन को निष्पाप बना सकते हैं। ज्ञान से पहले जो भौतिक शिक्षा एवं भौतिक सम्पत्ति हमें प्राप्त थी उन सभी के द्वारा हम सकाम कर्म ही कर रहे थे। जब हमें जीवन का उद्धार करने वाली अध्यात्म विद्या से अविनाशी गुरू के शब्द की पहचान हो गयी और उसकी ज्योति के दर्शन हो गये तथा दिव्य संगीतमय ध्वनियाँ सुनायी देने लगीं, मृत्युरोग को मिटाने वाले अमृत का बोध हो गया तब हमारा जीवन निष्काम होकर आदर्शमय बन गया। परमात्मा की आवाज़ शब्द रूप में सबके स्वर में है। इसी आवाज़ से सभी जीव प्राणियों में अनन्त आवाजें गूंज रही है। इस शब्द का सुमरन करने से हमारे अन्दर चार वेद प्रकट हुए अतः सभी पाठकगण इस पर विचार करें कि इस अविनाशी गुरू के शब्द के सुमरन करने की महानता कितनी ऊँची है। इसी शब्द का सुमरन करता हुआ साधक इंगला पिंगला को पारकर सुष्मना स्वर से त्रिकुटी में पहुँचकर परम आनन्द को प्राप्त करता है। साधक ज्ञान चक्र में स्वयं नहीं पहुँच पाता है उसे परमात्मा की चुम्बकीय शक्ति ही अपनी ओर खींच पाती है इसको अविनाशी गुरू का शब्द ही सम्भव कर पाता है। हम अज्ञानी जीवात्मा पहले अधर्म क्षेत्र में रहते थे तथा अधर्म क्षेत्र से शरीर की खुराक लेते थे। जब सच्चे सन्त का सत्संग मिला तथा गुरू कृपा से ज्ञान मिला तब हम अधर्म क्षेत्र से धर्म क्षेत्र में पहुँच गये इस धर्म क्षेत्र से हमें जीवन की खुराक मिलने लगी और हम धर्मात्मा बन गये। साधन सुमरन एवं सेवा में मन लगने लगा मन की चंचलता अचल ब्रह्म के सुमरन से कम हो गयी ज्ञान से पहले हमें यह भी पता नहीं था कि अधर्म क्षेत्र

का उत्पत्ति एवं प्रलय भी होता है। ज्ञान होने पर ही धर्म क्षेत्र की दिव्य शक्तियाँ प्रकट होनी शुरू हो गयीं और वे साधन में सहायता करने लगी। परमात्मा ने अधर्म क्षेत्र तथा धर्म क्षेत्र में जितने भी बीजों को बोया है उन सबमें परमात्मा की "रू" समायी हुई है। परमात्मा की वह "रू" सबको देख रही है परन्तु हम इन आँखों से परमात्मा को नहीं देख पा रहे हैं। धर्म क्षेत्र व अधर्म क्षेत्र में जितने भी कार्य हो रहे हैं वे सभी परमात्मा की नज़रों के सामने हो रहे हैं उनसे कुछ छिपा नहीं है। परमात्मा ही सब जीवों का सच्चा सहारा है वही हम सबका पालक एवं सबसे बड़ा रक्षक है। उसे कभी नहीं भूलना चाहिए उसका सुमरन निरन्तर करते रहना चाहिए। परमात्मा ही गुरू है और गुरू ही परमात्मा है वह अजन्मा, अविनाशी एवं अनाम है उस परमात्मा "रू" की अंशी हम आत्मा रूपी "रू" है उसी से मिलकर हमें पूर्ण शान्ति एवं परम आनन्द मिलता है। अतः गुरू का सच्चा सेवक बनकर गुरू के शब्द में सुरति जोड़कर सुमरन करते हुए जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना चाहिए।

भजन

शब्द का ही उजियारा साधो, शब्द का ही उजियारा है।
शब्द से सूरज चन्दा चमके, शब्द से नौ लाख तारा हैं।
इसी शब्द में कामधेनु है, कल्प वृक्ष एक न्यारा है।।
इसी शब्द से सृष्टि उपजे, इसी में सृजन हारा है।
इसी शब्द में ऋद्धि सिद्धि के अटल भरे भण्डारा है।।
इसी शब्द से अनहद गरजे, इसी में अमृत धारा है।
यही शब्द ही सब जीवों के, जीवन का आधारा है।।
इसी शब्द से ज्ञान उपजे, कोई समझे गुरू का प्यारा है।
चेतन वाणी सुनो रे प्राणी, इसी में गुरू हमारा है।।

निष्काम योगी सिद्धियों को कभी स्वीकार नहीं करता है।

चालीस वर्षों तक लगातार साधन करने के बाद मुझे पता चला कि हमारा बाँया स्वर सकाम है। जिसकी जड़ पृथ्वी में है इस स्वर में कल्पवृक्ष है जिसमें अनेक ऋद्धि-सिद्धियाँ भरी पड़ी है। इन सिद्धियों के बल पर पहले समय में योगी आसमान में उड़ते थे तथा पानी में पैरों से चलते थे। इन चमत्कारों से जनता बहुत प्रभावित होती थी तथा उन पर काफी धन की वर्षा करती थी। परन्तु सिद्धियों का चमत्कार बहुत दिनों तक स्थिर नहीं रहता है ये सिद्धियाँ मानव को परमात्मा से मिलने नहीं देती हैं ये सिद्धियाँ ज्ञान मार्ग में बाधक हैं। साधन करते हुए मेरे बायें स्वर में भी कल्पवृक्ष पैदा हुआ वह एक विशाल वृक्ष के समान था वह आसमान को छू रहा था उसकी शाखाएँ सभी दिशाओं में फैली हुई थी। जिन्होंने सूर्य को भी ढ़क दिया था जब चारों तरफ अन्धेरा हो गया तब मैंने गुरू महाराज से प्रार्थना की- हे गुरू महाराज! यह तो अन्धेरा हो गया है। मुझे रास्ता दिखायी नहीं दे रहा है। इतना कहते ही मुझे तुरन्त गुरू महाराज ने रास्ता दिखा दिया। सूर्य के आगे अन्धेरा दूर हो गया। सकामी साधक सिद्धियों में उलझ जाता है, वह इन्हें पार करने में असमर्थ हो जाता है। परन्तु निष्काम योगी सिद्धियों को कभी स्वीकार नहीं करता है। वह परमात्मा को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प करता है। इसलिए परमात्मा उनकी मदद करता है। साधक को विचलित करने के लिए सिद्धियाँ अवश्य ही आती हैं। साधक उन्हें स्वीकार करे या न करे यह साधक पर निर्भर करता है। मेरे साधन काल में ऋद्धि-सिद्धियों के अनेक बच्चे मेरे अन्दर पैदा होते रहे और मरते रहे। हमारा दायाँ स्वर निष्काम है जिसकी जड़े ब्रह्माण्ड में होती हैं। जब साधक अपने बायें स्वर को दाँये स्वर में मिला कर साधन करता है तो सारी सिद्धियाँ कमजोर हो जाती हैं। मेरा साधन दायाँ स्वर में प्रबल रूप से चलता रहा, तब सारी सिद्धियाँ अपना खेल न दिखा कर हार गयी। फिर कुछ सिद्धियाँ बच्चे के रूप में मेरे सामने आईं और बोली महाराज हमें अपनी शरण में ले लो। हमनें उन्हें शरण में ले लिया क्योंकि हमारे सत्संग में संख्या कुछ कम हो गयी है। इस प्रकार वे सभी मेरे दाये स्वर में प्रवेश हो गये। बायाँ स्वर की जड़ सृष्टि में होती है जो लगातार साधन करते हुए उखड़ गयी। मैंने ब्रह्मचरित्र का पालन करते हुए बहुत वर्षों तक साधना की। मेरा उद्देश्य परमात्मा को प्राप्त करना था इसलिए बायें स्वर में उलझन पहुँचाने वाली सभी सिद्धियाँ दायां स्वर में शामिल हो गयी। जब दोनों स्वर एक साथ मिल गये तो सकामी जीवन निष्कामी बन गया। दोनों स्वर एक साथ मिलने पर गुरू कृपा से मोक्ष मिल गया और मेरा यह मानव जीवन सफल हो गया।

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल रोहिणी संस्था द्वारा अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन दिनांक 24.11.2019 दिन रविवार को "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर 11 दिल्ली में तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी के तत्वाधान में किया गया जिसमें दिल्ली, मु॰ नगर, मेरठ व गौतमबुद्ध नगर के विभिन्न केन्द्रों से सक्रिय प्रेमी सम्मिलित हुए। महात्मा जी ने सत्संग प्रवचन करते हुए प्रेमियों से कहा कि मानव जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है परन्तु आज का मानव अपने वास्तविक उद्देश्य को भूलकर मोह माया में फंसा हुआ है मानव का शरीर साधन का धाम तथा मोक्ष द्वार है मोक्ष द्वार पर आया हुआ है मानव इस ओर ध्यान नहीं देता है अतः वह आवागमन के चक्र से निकल नहीं पाता है मानव शरीर की श्रेष्ठता को जानने के लिए सच्चे सन्त की शरण में आकर ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। परमात्मा का सुमरन मानव को भव–बन्धन से छुड़ा देता है। जो साधक मनोयोग से साधन व सेवा निरन्तर करता है वह अवश्य ही मानव जीवन के लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र अन्य कुछ भी नहीं है। ज्ञान ही मानव की वास्तविक पूंजी है जो जीवन के साथ और जीवन के बाद भी काम आती है। महात्मा जी ने मानव जीवन की श्रेष्ठता के विषय में भजन भी सुनाये। प्रेमियों ने भी वन्दना एवं गुरू महिमा के भजन सुनाये। आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ सत्संग समाप्त हुआ।

पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

1: आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका "अध्यात्म सन्देश" मानव जीवन का कल्याण करने वाली पत्रिका है। इस पत्रिका से अध्यात्म ज्ञान की विशेष जानकारी मिलती है। अध्यात्म ज्ञान के बिना मानव जीवन निरर्थक है।

— राजभोग (मु॰ नगर)

2: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में महात्मा जी के आध्यात्मिक अनुभव व्यक्त किये जाते हैं जो अध्यात्म विषय को सरल एवं सहज रूप से समझाने में समर्थ है। इस अध्यात्म पत्रिका ने ही मुझे अध्यात्म ज्ञान जानने के लिए प्रेरित किया।

— तेजपाल सिंह माजरा (शामली)

3: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका विश्व मानव को पतन से बचाने वाली पत्रिका है। यह आत्मिक विकास के लिए प्रेरणा देने वाली तथा साधना को उच्च शिखर तक पहुँचाने वाली सर्वोत्तम पत्रिका है।

— सत्यपाल सिंह कल्याणपुर (मेरठ)

4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका आज के भौतिकवादी युग में सत्य की राह दिखाने वाली एवं जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने वाली पत्रिका है। इसके नियमित अध्ययन करने से जीवन को अध्यात्मिक बनाया जा सकता है।

— डॉ॰ रामकिशन जेबर (गौतमबुद्ध नगर)

G-3/DL(N)/202/2019-21

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल रोहिणी संस्था द्वारा अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन दिनांक 24.11.2019 दिन रविवार को "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर 11 दिल्ली में तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी के तत्वाधान में किया गया जिसमें दिल्ली, मु॰ नगर, मेरठ व गौतमबुद्ध नगर के विभिन्न केन्द्रों से सक्रिय प्रेमी सम्मिलित हुए।

प्रकाशक, मुद्रक एवं महात्मा परम चेतनानन्द, चेतन योग आश्रम, सी.एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली-85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग

सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी

मुद्रक : टैन प्रिन्ट्स इन्डिया प्रा. लि., रोहद, हरियाण